Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

रणवीर सिंह बिष्ट

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
(प्रोफेसर) प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमैंट एण्ड टैक्नोलोजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

स्वाति पँवार
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमैंट एण्ड टैक्नोलोजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा,
स्वाति पँवार

रणवीर सिंह बिष्ट

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 21 pp. 119-122

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

रणवीर सिंह बिष्ट एक भारतीय चित्रकार थे। जो कि अपने जल रंग चित्रों व दृश्य चित्रों के लिए प्रसिद्ध थे। पहाड़ों में पले बड़े रणबीर की सोच बहुत अलग थी। उन्होंने अपनी कला के जरिए पूरे भारत में अपना नाम रोशन किया। उन्होंने कड़ी परिश्रम करके कला की सभी तकनीकों पर अपनी पकड़ बनाई। वह पहाड़ी क्षेत्र के रहने वाले थे। जिस कारण उन्होंने दृश्य चित्रों पर अपना कार्य बखूबी किया। उन्हें एक कलाकार के साथ–साथ कलागुरू के रूप में भी याद किया जाता है। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया था। वहां उन्होंने बहुत से बदलाव लाए। अपने गांव के वातावरण को वह अपनी पेंटिंग पर बनाने लगे। पहाड़ के सुंदर–सुंदर चित्र व वहां का शुद्ध वातावरण दिखाने लगे। यह प्रसिद्ध कलाकार पद्मश्री से भी सम्मानित हैं। उनकी कलात्मक रचनाओं ने प्रकृति को मानव रूप के साथ बड़ी कुशलता से जोड़ा है। इन्हें इनके कार्यों के लिए अभी भी याद किया जाता है। मैं उनके दृश्य चित्रों से बहुत प्रभावित हूँ।

मुख्य बिन्दु

प्रसिद्ध, विश्वविद्यालय, कलात्मक, बखूबी, पद्मश्री।

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा, स्वाति पँवार

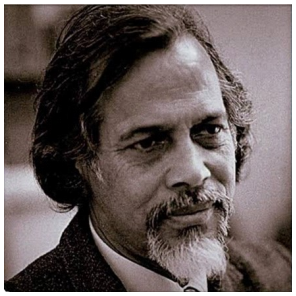

रणवीर सिंह बिष्ट एक भारतीय चित्रकार होने के साथ–साथ लखनऊ कला विश्वविद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर भी थे। जिन्हें समकालीन चित्रकारों में से एक गिना जाता है। रणवीर सिंह बिष्ट का जन्म 4 अक्टूबर 1928 को लैंसडाउन (गढ़वाल) उत्तराखंड में हुआ था। इनका विवाह एक कलाकार से हुआ जिनका नाम विमला था। वह सिरेमिक और टेराकोटा कलाकार थी। इनकी तीन बेटियां और एक बेटा था।

रणवीर सिंह बिष्ट लखनऊ विश्वविद्यालय के ललित कला महाविद्यालय के प्राचार्य थे। उत्तराखण्ड राज्य में उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एन्ड क्राफ्ट लखनऊ से ड्राइंग टीचर्स ट्रेनिंग सर्टिफिकेट और फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1987 में ललित कला अकादमी ने उन्हें अपनी फेलोशिप प्रदान की। भारत सरकार ने उन्हें 1991 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया। यह उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष भी थे।

रणवीर सिंह बिष्ट के कला गुरु ललित मोहन सेन थे। इनका जन्म पहाड़ों में हुआ था। जिस कारण यह पहाड़ों की सुंदरता, वहां का मौसम, वहां की हरियाली, वहां के जंगल से यह बहुत प्रभावित हुए और पहाड़ों की सुंदरता को ही वह अपनी कला में दिखाने लगे। सुबह से शाम होने तक में यहां की सुंदरता का रंग बदलता रहता है। जो कि इनको बहुत प्रभावित करता था।

इनके चित्रों में गांव की आरामदायक जीवनशैली, प्राकृतिक सौंदर्य, और स्थानीय रंग–रूप का अद्वितीय प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। इस प्रकार, रणवीर सिंह बिष्ट के कला के माध्यम से हम पहाड़ी संस्कृति के साथ एक संवाद में आते हैं और उसकी समृद्ध विरासत को समझते हैं।

रणवीर सिंह बिष्ट अपने जल रंग चित्रों व दृश्य चित्रों के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। मुख्य रूप से वह दृश्य चित्रकार के रूप में जाने गए। इन्होंने कई विषयों पर चित्र बनाए किन्तु इनको सबसे ज्यादा प्रभावित पहाड़ी दृश्यों ने किया। इन्होंने लखनऊ व आस–पास के और पहाड़ी क्षेत्रों के जल रंगों में लगातार कई दृश्य चित्र बनाए। इन्होंने असंख्य रेखा चित्र बनाए।

अमूर्त शैली पर इन्होंने कुछ ग्रामीण दृश्य व कुछ नगरीय दृश्य बनाए जिनमें से एक चित्र पर इन्हें राश्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। रणबीर सिंह बिष्ट ने 1960 के आस–पास नाईट श्रृंखला की शुरुआत की। जिनमें इन्होंने चटक तेल रंगों का ज्यादा प्रयोग किया। तेल रंगों के चित्रण में उन्होंने पश्चिमी कलाकार की तरह तारपीन के तेल का ज्यादा प्रयोग किया। और अपने चित्रों में पारदर्शिता दिखाई।

इस तरह की विशेषता उनके सिटीस्केप चित्रों की श्रृंखला में दिखाई देती है। 1980 में उन्होंने दृश्य चित्रण पर द ब्लू सीरीज बनाई। जो

कि उनके जीवन की श्रेष्ठतम पेंटिंग में से एक हैं। ब्लू सीरीज की पेंटिंग गढवाल हिमालय की प्रेरणा लेकर बनाई गई थी।

उनके दृश्य चित्रों (लैंडस्केप) में रंगों का सुंदर संयोजन, छाया–प्रकाश और गतिपूर्ण रेखाओं का अंकन है। उन्होंने अपने पसंदीदा विषय पर सार्थक चित्रण के लिए और भारत के प्राकृतिक–सामाजिक जीवन को दर्शाने के लिए अनेक जगह भ्रमण किया।

उनके चित्रों में वहां के स्थानीय लोगों के सुंदर आवास, पहाड़, चट्टान, पेड़–पौधों का नैसर्गिक सौंदर्य बार–बार प्रकट हुआ।

बिष्ट बड़े चित्रकार थे। उन्होंने अपने को केवल दृश्य चित्रण तक सीमित नहीं रखा। उनकी चित्रण शैली में समय के अनुसार बदलाव आता रहा है।

उनके 1963 की चित्र आकृति मूलक तो हैं लेकिन उनमें मनुष्य आकृतियों के सिर गायब हैं, लेकिन आँख और मस्तिष्क चित्रित हैं। सामाजिक अव्यवस्था और लोगों का व्यवहार कलाकार को बाध्य करता है कि वह प्रतीकात्मक ढंग से ही सही अपनी बात रखें। कला एक ऐसी भाषा है जहां कलाकार अपनी अव्यक्त भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।

इसके बाद के कई चित्रों में बिष्ट ने रेखा प्रधान आकारों को कम रंगों में बांधने की कोशिश की। फूलों से भरे वृक्षों के चित्र, बड़े आकार के रात्रि दृश्य चित्र, जिसमें काले, लाल और पीले रंगों वाले चित्र भी हैं। बिष्ट ने लोगों की पीड़ा को महसूस किया और अनेक रेखा चित्र और जल रंग चित्र बनाए।

उस समय ऐसे बहुत कम कलाकार लखनऊ शहर में थे जिन्होंने उस अनुभव को इतनी गहराई से देखा और समझा हो। जल रंगों के दृश्य चित्रों में बिष्ट जी ने मौलिक रंगों का प्रयोग किया है जिसमें मैदानी और पहाड़ी दृश्य प्रमुख हैं।

उन्होंने एक बार कहा था– "मेरा उद्देश्य केवल इतना है कि संरचना के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र यानी कला से संबंधित कलाकार या अन्य व्यक्तियों को यथासंभव निश्पक्ष रूप से देखा जाए। समाज और सत्ता उनको चारों ओर से दबोचे हुए है। लेकिन, कलाकृतियों का भी अपना दायित्व है। उन्हें व्यापक उद्देश्यों में शामिल होना चाहिए। क्योंकि अंततोगत्वा वे कलाकार और कलाकृतियां ही जीवित रहेंगी जिनका अपेक्षाकृत स्थायी मूल्य होगा।

रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने कार्यकाल में लखनऊ विश्वविद्यालय को बहुत उचाइयों तक पहुंचाया है और वहाँ की शिक्षा में बहुत सुधार किया। इस महान चित्रकार का निधन 1998 में हुआ था। यह बहुत ही बड़ी दुखद घटना थी। इनके कार्यों की सराहना आज भी की जाती है।

निष्कर्ष

चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट के कला में पहाड़ी संस्कृति का अद्भुत प्रतिनिधित्व है। उनकी चित्रकारी में पहाड़ी जनजातियों की परंपरा, वेशभूषा, और सांस्कृतिक विरासत का सुंदर अभिव्यक्ति है। उनकी कला से हमें पहाड़ी जिंदगी की रंगीनता और समृद्धि का अहसास होता है।

उनके चित्रों में पहाड़ी लोकगीत, नृत्य, और संस्कृति के विविध पहलुओं का दर्शन होता है, जो हमारे दिल को छू जाता है। उनका योगदान पहाड़ी संस्कृति को और भी सम्मानित और प्रशंसित बनाता है। चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट के चित्रों में पहाड़ी संस्कृति का रोमांचक और गहरा परिचय मिलता है।

उनकी कला में पहाड़ी जीवन की साहसिकता, और समृद्धि का अद्वितीय आभास होता है। उनके चित्र नहीं केवल रंग–बिरंगे होते हैं, बल्कि वे एक कहानी सुनाते हैं, जो हमें पहाड़ी संस्कृति के गहरे सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ, उसकी विविधता और सामाजिक संरचना को भी समझने का मौका देते हैं।

रणवीर सिंह बिष्ट की चित्रकला में पहाड़ी संस्कृति का आलोचनात्मक अध्ययन भी होता है। उनके चित्रों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक पहलुओं का विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अलावा, उनके चित्रों में पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय जीवन की समस्याओं पर ध्यान दिया जाता है, जिससे उनका कला सामाजिक संदेश का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत बनता है।

रणवीर सिंह बिष्ट के कला का महत्व न केवल स्थानीय स्तर पर है, बल्कि यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान का स्रोत है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, डॉ० श्याम बिहारी., अग्रवाल, डॉ० ज्योति. (2022). भारतीय चित्रकला का इतिहास प्राचीन भाग–१.
2. अग्रवाल, डॉ० श्याम बिहारी., अग्रवाल, डॉ ज्योति. (2020). भारतीय चित्रकला का इतिहास मध्यकालीन भाग–2.
3. अग्रवाल, डॉ० गिर्राज किशोर. (2019). आधुनिक भारतीय चित्रकला।
4. भार्गव, डॉ० सरोज. (2020). भारतीय कला का इतिहास।